

[illegible]

शिवशक्तिविग्रह उद्दिष्ट
 केने सप्तविंशतिमय शिवक
 रेभवेष्टेगच्छीतभातिरुवर्षादि
 उपरिन्नीतभा ॥ ७ ॥ महुः सप्तम
 मयीजमज्जलायुधमोयिउंक
 रभरेणभक्तप्रवाति ॥ यद्यप्ये
 भक्तमपातिउपधप्रएभुं मरु
 मभमगिनंभुमासिगच्छीभा
 किमुपिप्रचभक्तमभमिजमिउ
 ह्यभयस्रगलकजिभकलवीर
 म ॥ महेश्वरीप्रकलभक्तकण
 महेश्वरीउडेष्टकउभक्तमिं

ग.
 भु.
 ३३

भा ॥ १० ॥ उपः प्रयाति निलये
 रकर्षे भद्रपते येन च न भद्रप
 भद्रपते कर्षे ॥ एते रते कर्ष
 रक्षे भद्रपते कर्षे ॥ एते रते कर्ष
 रक्षे भद्रपते कर्षे ॥ ११ ॥ भद्रपते
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥
 कर्षे ॥ कर्षे ॥ भद्रपते कर्षे ॥

उरु ॥ किं प्रेक्षितं वरनये ॥ सुको
 कर्गेति गल्ली भभा उरु रग्लि उवा
 लि उर ॥ ११ ॥ भिन्ने रवाधु उर ॥
 नराभय आगीचा ॥ इरु रुधु
 रभभारभद्याः ॥ येगी प्रयाति य
 रिल इरुवा विपारे गल्ली भद्र
 रुगतिं विरुपा उभद्रभा ॥ १३ ॥
 लालले भगि रिमे विरुपा उकी
 नमजिः शुक रुग उभद्रि रउभरे
 रुः ॥ यद्रु नराभ उरु रधुवा रु
 भाद्राद्राल्ली विरुपा य उभेभु रि
 भागरा रुभा ॥ १७ ॥ भद्राणि ये रु

कृत्विचक्रु॥ कीउत्तमक्रिचक्रु
 समउद्ययभयउत्ति॥ श्रीदीयक्रु
 शानवास्त्रिउत्तमक्रुभाभचम
 इल्ललउत्तिउत्तमक्रु॥ १०॥ ॥
 महुत्तमक्रु॥ श्रीरश्रयश्रीश्रान
 भ्रुधपरिचक्रु॥ मयभद्रभेत्त॥ श्रीर
 रगमिगठिउत्तिगठिगठिगठिः भा
 भद्रलेरिगठिगठिगठिगठिगठि
 क्रिष्टक्रिष्टिकमलएयगठिगठि
 श्रुल्ललउत्तमक्रुगठिगठिगठि
 म॥ ॥ ॥ श्रीरश्रयश्रीश्रान
 गठिगठिगठिगठिगठिगठिगठि

१०.
 १०.
 १०

भा॥१३॥ उदय ७ म क भ वै भि
 विमर मृत्तं उं भा न वं य म ठि व क
 न भो ए ले स भा॥ शु प्र धि न भु स
 अर उ य मी य म डे ग ल्ली शु क क
 ल न भ ड ल ग भु रि ट्ठ भा॥ १३॥ म
 इ य मी व भ ठि वा छि उ मं य ठि ड्ठ म
 हः ५ ठ व भ ठि उः भु फ ली य उ य
 धा री रु व ट्ठ भ र वा र विला भि नी नं
 म चा र पा प म ल नं वि म र ड ग ल्ली
 मी क्क ड्ठि म उ म क न उ उ ड्ठ मे ड्ठ य
 उ ग भो ड ल यि डं क ल भ ड्ठ म क्कः
 ग ल्ली उ य वि ण भ वि भ य ड्ठि गी क

:

१३

१४

१५

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ भक्तलक्षणं
 सा ॥ ११ ॥ भक्तीरुवद्वयलप्रचय
 कर्मभयभर्त्तृप्राप्त्युपायमन्त्र
 किमुक्तैः ॥ भट्टकदायिकरुग्धर
 प्रह्लादवाज्जिदासुठैरिदमंभुगा
 भुगल्लो ॥ १२ ॥ रम्यभक्तभक्तिर
 भुक्तगलपद्मभैरवभक्तभक्त
 भुक्तभक्तिभक्तभक्त ॥ कर्तृद्वयभुक्तभक्त
 भुक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 भुक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 भुक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त
 भुक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त

११
 १२
 १३

यच्चरितमकुतमउलीरंगल्लीम्
 र्गमिभरसादुरितपत्तु ॥ १३ ॥
 वृद्धायमत्तरविणवृथयगभीष्टः
 यथैः भगवत्कृतकुरुकुरुके
 राकेष्टकलउरवसुतावभक्ति
 स्त्रीवपुर्गभरिधिस्तुतुष्टवस्त्रैः
 गतिधरगतिरगित्तपलेकपेउष्ट
 यरठष्टठगतिनिमित्तवैष्टु ॥
 यः भवत्तुगतिगतिस्तुतुवास्तु
 र्गमिभरसादुरितपत्तु ॥ १४ ॥
 यः भवत्तुगतिगतिस्तुतुवास्तु
 र्गमिभरसादुरितपत्तु ॥ १५ ॥
 यः भवत्तुगतिगतिस्तुतुवास्तु
 र्गमिभरसादुरितपत्तु ॥ १६ ॥

११

कदाचिठजः॥ यःभयातिकर
 कर्त्तव्यकर्मिण्डेगल्लीठवद्विपि
 ल्लैककिउभरैव॥ ३०॥ कवाल
 यार्त्तपिपरंयमभाभनतिकम्प्रीर
 केमभमलेकयजयजाः॥ भृ
 उगत्रिउयमीयधकारविक्रमुकु
 य॥ ३१॥ कवउभाविठवायगल्ली॥ ३२॥
 वीउटवभुतिवकभृदयारुउय
 दमल्लयेल्लनउयाठगाउंभृभाः
 नभायठविगाननभृकरभृगल्ली
 ल्लुभा॥ भउरदिउंभृदयारुउभृ
 भा॥ ३३॥ वीउटवभुतिवकभृदय

३०
 ३१
 ३२

या॥॥ भद्रकृष्णकृष्णवक्रमये
 कथयथाः कलेष्टिरभूमिरभोम
 कतिभुक्तपभा॥ सुष्ठुतदः भक्तमि
 गैमविलेयमयिमद्वयउठवउ
 मेमुठमयगल्ली॥ ३२॥ तत्रतिर
 भुकररङ्गउलेनयैयद्यामल्लतभु
 मिरभः भुक्तप्रापङ्गः॥ भङ्गम
 विमलितमइरायालितशीगल्ली
 कर्तेउभमणीतभमेधमङ्ग॥ ३१॥
 कइवृणोतिरलमामि॥ वाङ्कै
 मरुभूमिभक्तविलेकिउभङ्ग
 विः॥ लङ्क्रीपगंठणाडियन्नर॥ ३४

भाग्यलक्ष्मी गानायक गाने भूयः
 उगच्छती ॥ ३ ॥ गङ्गादिगीर्णालप्र
 उमगीर्याधुदः प्रचणमनियभा
 वियभादिधेवे ॥ ठवङ्कठजिविध
 वंठगाउभापवङ्गीरुगणिलक
 योपुभाभिगच्छतीभा ॥ ४ ॥ डि।
 गंगुभायिभनिलोकिडिभधुगङ्ग
 भाङ्गाभमङ्गभायियउत्रभाभरति।
 गच्छतीभमभुमरिउपहृडिप्रगन्ठ
 कजाविरिज्जगदीभउङ्गभमभि
 ॥ ५ ॥ भीरप्रगौरत्ररुवयमीय।
 मुञ्चिपीयधवधुभगिगष्टगल

४
 ५
 ४७

वृणावः ॥ कुजेमठलनयनल
 मयुसकेगल्लीभमाधभुपापीध
 लभाष्टकेउभा ॥ ३७ ॥ सुहंपराध
 उतिदधुउभा ॥ लीगह्नुनामलेइ
 परिकुपुपुःधया ॥ गल्लीठ
 लोगविणकिङ्क रलीडिठङ्क मनेइ
 उंरुमयभविदिउरकभाभा ॥
 रङ्गविभाजगउठङ्क कगवलभ
 यङ्गयधङ्कगानडिजगडिधमि
 सु ॥ गल्लीभपानउरदधुउकह
 ठरमकेरवाचलमिपोधुभा
 भिरिहभा ॥ ४० ॥ उंकेलयैवगडि

भेतिवमद्विभूः पदुः पउंमुप।
 लिफभापिउभाजभा॥ भूपोपियः
 कविपापउभेविनामिति हेमिउ
 दभरुमिभू॥ भाभिगल्लीभा॥ ३३
 भू॥ नककमरुउउपउवलेप
 पामिगगकवलद्वभयैतिगाउः।
 यमुजिउहउउभेपिउभाभभृग
 ल्लीभमंविउउयामुगाउउरुभा
 ३३॥ पदुमुनद्वगउपवरेउर
 यगभायमद्विपगभूउउउगभृ
 कीगमलेकमलेउद्वभमकमज्ज।
 गल्लीभउकन॥ विभपाभद्वगभा

ग.
 भु.
 ३३

नानादिचिलयमेतिहकदिहने
 यक्रेयगदिनतिठभूरुहनेयस
 भट्टभुभुभनमःभउउभभगिभ
 शुभकंपरभरेणारसंभिरभुः
 उगणियहृतिगारउमेककेकभे
 येगनमराविणेभुतिगभियशुः
 पापकयायनिगाभुचिकरेभुकेउ
 मारुपीपकाभुणायगेतिउरभभ
 भा॥३॥ नोदीउरुहतिभरभुभे
 द्रापागेयहृरुपहृताभुभभु
 उगभभ॥ कभोरापदिउभनेति
 उभतिभुंवागेवउउभभैभुका

सुगन्धीमः ॥ २१ ॥ भिष्टाव्येपरि
 उंतिगनधुप्रति यस्तु रियाविम
 सुलवज्जयेताः ॥ भट्टेयमादि
 विनंति सुककाममायो गल्लीपद
 ज्ञयगले मरुं म्याभि ॥ २२ ॥ ठा
 जीव घीमिलिलभउतिरुद्रुपोड
 पप्रुतिभपियो गभिउंनमज्ज ॥
 अंकेलयापयतिभु डिरेवयभ
 गल्लीभदुगरिउठारभपाकरेउ
 २३ ॥ गङ्गुलानिभुमो रियिवा
 लयागंवष्टावष्टमगिरे करे
 डियष्टाः ॥ पादभुडिदिनिगाठज्ज

ग.
 सु.
 ३३

रापकडाचोमसाइमरुमरिइति
 मभासुगल्ली ॥ १० ॥ वक्रकलेक
 तिलयेधकरेगिपमवाकसिपेनि
 वरातिभिरगंगलीइ ॥ यममय
 कणायगेकिउरु ॥ ५ ॥ वेगासिउं
 रिगागउं ५ उं ॥ १० ॥ ५
 भूतिवैरुवभपाऊरुउं विपडिंमः
 त्यातिनतिवशिनेकरडिभुउयाः
 धामभुगामयगलागउपवगसु
 उपागलीनउरुमइतिरुपमसि ॥
 धडिमुपिनशाभयाभुरुडाउगदः
 भूमीकउंमयनभकरः ॥ कुमारः

योऽङ्गुलमाकृतवधोऽप्युत्तमप्रभृति
 वाक्येतिवाग्यउठऊठयातिग।
 स्त्री॥१३॥ पष्टेतिधर्गिरणीम्य
 रंभमभैदुरंभकैधर्गिरणीम्य
 गङ्गिमेवा॥ द्वागरेगशुठऊठया
 भोऽङ्गुलमाकृतवधोऽप्युत्तमप्रभृति
 गङ्गामयंभा॥१४॥ रभुभापेठव
 डिरेवभ्रापयणाउदङ्गुलमाकृतव
 तिउठऊठगङ्गाः॥ भादृधुधव
 गङ्गाउठमभृतिगङ्गीविमल
 दङ्गुलमाकृतवधोऽप्युत्तमप्रभृति
 यंभमभययतिमवतिवङ्गुलमाकृतव

ग.
 ३.
 ३-

वगवतिभमदिउकीडिजीराः
 येनिहभज्जडिउवाडिभरहकम
 करहिभाउरमुठदरिपाकिभा
 भाभा ॥ ५० ॥ मरुदकमयडिमी
 पमिपेवमीपायाष्टयिगेठरुडि
 पायपउन्नपाडिभा ॥ पुनरुठिपं
 किरडिकल्लललभकुंरंरुकि
 रभुमकभापु ॥ उष्टगल्ली ॥ ५१ ॥
 गच्छेमिरेलुगडिपाकरलारउष्ट
 विप्रभुरेममिरभोविलुअडिजीए
 पादेवमीपगर ॥ मरुउष्ट
 ल्लीठयपहउष्ट ॥ भाभितिहभा ॥

पोंसिंहपुमिहपराभाजनिहभा
 विनज्जमाजिविकुण्ठेपपत्रोहोवि
 धुरग्लोमीरलंपपत्राभा॥१॥ भिक्कु
 भमकुं परभिक्कुभिक्कुं परेपरमी
 परउडुनिधुभा॥ रंमीपरमीपर
 भाजभहोहोभिक्कुग्लोमीरलंप
 पत्राभा॥३॥ ५॥ ध्यामिक्कुः॥ धि
 उंणागकुभक्कुकांणाभी उभ
 भीम॥ ५॥ कवकिं धिउकुमजिं
 उंहुउग्लोमीरलंपपत्राः॥ ३॥ ७
 ८॥ धुधुपिप्ललाभपृगजिंभ
 कंष्टोपजडलिरीधुउभा॥ ५

२१-

२२

३३

क म य ज्ञी भक्ति उं भक्त मी गी श्री क
 ग ली न म उं एं क ० ग भा ॥ ई पा
 यि न वि धु उ काल कृ पं भं दार
 ग र्गुं म र ॥ व र्ग मः ॥ ७ ॥ म कि
 इ या गी उ गु ॥ ७ ॥ म य ज्ञा भ वि चा ण
 या मि नै प भ व द्वा भा ॥ भ क म य ज्ञी
 भु वि म ज्ञ म जिं ये उ दृ ग र्गुं म र
 ॥ भु प ज्ञा भा ॥ १० ॥ वि द्वां व उं म भु
 वि वे कि नं य वि भ ज्ञ म जिं प र भा
 क रि ध्वा भा ॥ भु भु प ध्वा म र्गुं म र
 र लै वि भ ज्ञ ग र्गुं म र ॥ भु प ज्ञा
 भ ए शा ग उ दृ ग र्गुं म र ॥ भु प ज्ञा

गीवामभरुभाऊभा॥विभञ्ज
 दतीचभगदिमैष्टात्रिचा॥रा
 स्त्रीसरलंभपत्राभा॥११॥विभञ्ज
 युक्तःपरमपुत्रीतःपञ्चात्रिणीतः
 परमात्मज्ञः॥परंकलाभिद्धि
 याम्बिठिजोहोमुष्टुगस्त्रीसरलं
 भपत्राभा॥१२॥परंपरैसीपर
 भाऊभातंगुलात्रिजंगुलुगनी
 रभातभा॥भकासिजोयेगविद्धि
 इगाहःभगगस्त्रीसरलंहोभप
 त्रभा॥१३॥वीरंगवरैसीवीरगभु
 वराहोवगहयेगामरगंकग

रा
 भु
 ३३

ह्यभा॥ तपस्व्यस्तु मेघाय जयंती
 गच्छेद्दोषी रक्षणी सारं वृष्टमः
 मूर्तिभूतिष्टाना कक्षयेष्टो उक्त
 ज्ञानास्तु उक्तं गच्छेत्॥ प्राप्ते उक्त
 तपस्व्येष्टो पगच्छेद्दोष रक्षणी स
 रं वृष्टमः॥ १०॥ चरादिवागु
 क्रिभभूयस्तु मागु रयंती गच्छ
 तानि गाच्छभा॥ भक्तवागुति
 क्षणानिभयो द्वावेष्टो रक्षणी सारं
 प्रपन्नभा॥ ११॥ मुक्तारं ठिति
 भक्तारणीने विउत्तं जीविष्ठभा ले
 त्वभीष्टका॥ चरुष्टो गच्छेत्

०१

99

५५
 च न टिऊळं रिऊएष्टाभाकिउ
 रलरिहभा ॥ मरुकिठिमुयस
 ठिः प्रमेष्टांक मुंगल्लीसरलं द्वं प्र
 यत्राभा ॥ ७५ ॥ थिगेलवेमं भुतिमु
 थिदजेलहृदुगंउउरलं प्रमात्रभा
 भाके सुंरी मजिभरहभा जं प्रपाय
 गल्लीसरलं द्वं प्रपात्रभा ॥ ७७ ॥ प्रप
 सुद्वभुगिरगिउरुं प्रका मजिप
 रभाक मजिभा ॥ परंमंरुं प्रपरि
 रुमुभाभपागगल्लीसरलं द्वं प्र
 यत्राभा ॥ ७९ ॥ किरउ मजिमवरी
 मगकिवने प्रवष्टैरुपभोविउं उभा

७५
 ७७
 ७९

१५५
 मरुत्तभाजाद्यगिपालयत्रीभरु
 गल्लीमरुत्तभुपपत्राभा ॥३३॥
 गोशुगीगणाविभक्तिरीयपोलभु
 रुद्धोमीभक्तपांकगलाभा ॥ उभक्त
 नीपदभुभाऊमाजि उभक्तनीयकि
 मरुत्तभुपत्राभा ॥३७॥ यंवेरुभा
 कैरुकिगायत्रीउं गा ॥ उच्चशयदरि
 मेपुक्तुभा ॥ एतेजिचियः पुरुद्धी
 यभाऊमुक्तिगल्लीमरुत्तभुपत्रा
 भा ॥३॥ विष्णुः सवष्टगालपदं
 मभोरंमहुक्तुकंउंगाउद्धविउंय
 ज ॥ उद्धभुयंरुगाउंरुजयतीपदं

धुगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३० ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३१ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३२ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३३ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३४ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३५ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३६ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३७ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३८ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ३९ ॥
 कगल्लुमीरलं दुं वृमः ॥ ४० ॥

ग.
 पु.
 ३०

सविष्ठाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग
 ७७भा ॥ भृष्टाभिडिकाभैः प्रकीर्णं भग

३

निहृयतैः धर्मभक्षैरग्राभ्यां विरु
 जिगृह्णीमरन्ध्रपत्राः ॥ ३३ ॥ शिषु
 वरपुण्याङ्गिकैरिव गायह्वय
 भर्का एतं यमाजिभा ॥ वेगं कष्टमा
 भुल्लेष्टीकैरिव गृह्णीमरन्ध्र
 पत्राभा ॥ ३४ ॥ ह्येति चि विद्वि शिषि
 रकार्यैरैः भर्कामितं अदम्यार
 मिह ॥ उल्लुजिह्वं भवयेरैस्त्रयेण
 ह्येति गृह्णीमरन्ध्रपत्राभा ॥ ३५ ॥
 उल्लुगं ययामि तिष्ठेत्तयं जीमूतैर्गो
 र्जं भूमिदिग्गभिमह ॥ प्रभातं रोपय
 जीमूतपादं उल्लुगं गृह्णीमरन्ध्रपत्रां

ग.
 सु.
 ३१

गाना ७७ मूलतः क म य हु न
 म कं पी भ कि दे म य उ उ ॥ भ वि रु मे
 व भु व रं व रं छं दं ठ न ग स्त्री म रं
 धृ प तः ॥ २३ ॥ मि ग भु गं म्भ उ रं
 ठि प रं सि म्भु रि या स्त्र न भे क रि क
 ग ठ म्भ ॥ प स्त्र म म ल भु ए क य क्क
 दं भे ए ग स्त्री म रं धृ प तः ॥ २३ ॥
 भ ल भु वं मे रु व ग ७ ए उ रं भु मे
 क य भु गं भ क नृ म्भ ॥ उ म्भ उं म कि क
 पे य म नृ उ कुं भी उ ए रं रं ग स्त्री ५
 प तः ॥ २४ ॥ मे वी उ रं या वा न ग ए
 म भु गं भु म्भु ल यं जी य म र ग्द ॥

वद्वीकृत्तंतिभूत्तंकलकृत्तं
 उभयद्वीसर्त्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 विद्वत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 पंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 त्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 सत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 कृत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 गत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 द्वात्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 शालिन्त्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 पत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं
 पत्तंत्तंत्तंत्तंत्तंत्तं

८५
 ८५
 ८५

दंवयंश्चपुपत्राः ॥ २३ ॥ उभेभुव ।
 भाकिमेहृभुत्रं पुपालयंती वर
 भिंकाएकपाभा ॥ मुकिमेहृमपय
 तीरापवभिंकागल्लीमरं ॥ दं पु
 पत्राः ॥ २४ ॥ वलेकलाकेवदक
 पोंउघाहं सकिंकिहोयागभागे
 उमगे ॥ भनकुउंउभा ॥ उंरिले
 कीगेवदगल्लीदंवयंश्चपुपत्राः ॥
 रकीकपाकभा ॥ २५ ॥ पृषिहोरा
 गात्रभिंकाठरकुउभनउः ॥ पा
 सुपेलोकिउभयंतीदंगभागल्ली
 मरं ॥ पुपत्राः ॥ २६ ॥ भनमेहृगव

५०

ॐ ह्रीं भिभं भुः पौलभुवं मे सुव
 उगृह्णाः ॥ श्रीं उरुगारि उरुग
 वं ॥ दोगभगं श्रीं मरुं प्रपञ्चः ॥
 १७ ॥ कलो रै ह्येयावकं मराभाज
 लाभयो गौठरु उरुगारु क ह्र
 महुतामवज्जी उभगं ह्ये रुरुग
 श्रीं मरुं प्रपञ्चः ॥ १७ ॥ मरा
 मिभायां मरुभा सुलज्जी मिष्टाक
 भुभुं कं मरु ह्ये गृह्णाभा ॥ य उरु
 रं उरु उरु सुलज्जी विष्टा मिष्टा श्री
 मरुं प्रपञ्चः ॥ १८ ॥ य ह्ये गृह्णा
 भुभुं मिष्टा कपो मरुं मरुं मरुं

ग.
 भु.
 ३७

मञ्जुगच्छः ॥ हाहाभभेक इभञ्ज
 भञ्जीपङ्कलगल्लीमर ॥ ५५३ः
 मुउमधुनाहभा ॥ ७७भभकोपङ्क
 ७७उगाभेकुलिउगाभा ॥ ११गच्छ
 गोवभभेहरीके भुवभुगल्लीम
 र ॥ ५५३ः ॥ ११ ॥ लैहूकेमार
 मयजीभभकोपिहृहृपडिभु
 नृहृ ७७भा ॥ हृहृगेवीधुपजीधु
 यजीहृगेधगल्लीमर ॥ ५५३ः
 यकिमुयाभुभिउरेभीभेधुनि
 यगालयजीहृ ॥ ११ ॥ पङ्कगुवै
 हृभधुिगगाभेहृमजिगल्लीमर

५५

५५

ॐ प्रपञ्चः ॥ १३ ॥ रागरे उरु कष्टं
 उरु कष्टं प्रपञ्चमयं जीमि वृणा उ
 दयाय गी ॥ भूष्टं प्रपञ्चं कवमजि
 यज्ञं मा उदगं स्त्री सर ॐ प्रपञ्चः ॥
 १७ ॥ गृह्णाति गृह्णाति गति चिन्ता नि
 वाकं विद्या निमवेक सले ॥ श्री ॥
 यमाति परगुण भिन्न नि उरी यरा
 स्त्री सर ॐ प्रपञ्चः ॥ २० ॥ भवंचय के
 उरु प्रगति भूष्टं पंचाये श्री भिष्ट वृ
 क्त भव क्त भव ॥ उरु मा उरी यि रूणि
 कृष्टं पोक्षं भव ग स्त्री सर ॐ प्रपञ्चः
 २० ॥ कां कां रागरे उरु कष्टं दक्ष

ग.

शु.

र.

पंभकरएवभव॥ कारंकरंभ
 विमभलीरोहंमात्रिरल्लीमारं
 भूपत्राः॥७१॥ परत्रुविउंमिउं
 यवभष्टयषासरागिरिगंभम
 भुभा॥ उंमिउंभारिउंवेदएले
 भुंभाउराल्लीमारंभूपत्राः॥७२॥
 पपठुचैभष्टःपाञ्चउञ्चाष्टरु
 मकञ्चवल्पापामभा॥ पराकि
 भद्रभंयद्रुंउंमिउंमिउंमिउं
 इमयैभ॥७३॥ मिवःपाषिष्टाञ्च
 भरापगंउंभराभुगांतीकुवरावि
 विष्ठाः॥ भद्रुंमिउंमिउंमिउंमिउं

गल्लीरभाभैमदिभाकिप्रहभा
 भगभभाष्टुउपापपद्मपद्मभ
 राहृतिउपापपद्मपद्मपउर
 वुउभोगमल्लीकृयज्ञकृयःमर
 लंमयाभः॥१॥ विम्वरवेचभरु
 मृज्ञरजीभाहृतिहृतिहृतीप्रध
 म॥ वधुगभाहृरगभभुतिगभिइ
 मगल्लीमरलंमयाभ॥१॥ गल्ली
 भुवयःप०उिप्ररुउनिहृउउीगि
 वारिवनः गेगाज्ञरहृतिविपज्ञ
 रहृहृमजकभाज्ञरुवतिभैकः
 गल्लीभीमीभुतिभमयकृवनीमी

ग.

भ.

५०

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

